Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue No. VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

महात्मा गांधी का स्वदेशी आन्दोलन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue No. VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

महात्मा गांधी का स्वदेशी आन्दोलन

Anita Pandey*

Research Scholar, Mahatama Gandhi Kashi Vidya Peeth University, Varanasi (UP)

सार – ***स्वदेशी आंदोलन, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और विकासशील भारतीय राष्ट्रवाद का हिस्सा, एक आर्थिक रणनीति थी जिसका उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य को स्वदेशी से जुड़े सिद्धांतों का पालन करके और भारत में आर्थिक स्थितियों में सुधार करने के उद्देश्य से था और जिसने कुछ सफलता हासिल की थी। स्वदेशी आंदोलन की रणनीति में ब्रिटिश उत्पादों का बहिष्कार और घरेलू उत्पादों और उत्पादन प्रक्रियाओं के पुनरुद्धार शामिल थे।***

----------X----------

स्वदेशी आंदोलन

स्वदेशी आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक महत्वपूर्ण आंदोलन, सफल रणनीति और दर्शन में। स्वदेशी का अर्थ है - 'अपना देश का' इस रणनीति के लक्ष्य ब्रिटेन में बने माल का बहिष्कार करना तथा भारत में बने माल का अधिकाधिक प्रयोग करके साम्राज्यवादी ब्रिटेन को आर्थिक हानि पहुँचाना व भारत के लोगों के लिये रोजगार सृजन करना था। यह ब्रितानी शासन को उखाड़ फेंकने और भारत के समग्र आर्थिक व्यवस्था के विकास के लिए साधन का इस्तेमाल किया गया था

स्वदेशी आन्दोलन भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का एक महत्त्वपूर्ण अन्दोलन है जो भारतीयों की सफल रणनीति के लिए जाना जाता है। स्वदेशी का अर्थ है - अपना देश का इस रणनीति के अन्तर्गत ब्रिटेन में बने माल का बहिष्कार करना तथा भारत में बने माल का अधिकाधिक प्रयोग करके ब्रिटेन को आर्थिक हानि पहुँचाना व भारत के लोगों के लिये रोज़गार सृजन करना था। स्वदेशी आंदोलन, महात्मा गांधी की स्वाधीनता आंदोलन का केंद्र बिन्दु था। उन्होंने इसे स्वसाज की आत्मा भी कहा था।

1905 की बांग-भांग विरोधी जनजागरण से स्वदेशी आंदोलन को बहुत बल मिल गया। यह 1911 तक चला और गान्धीजी के भारत में अभिनीत पूर्व के सभी सफल अंडालों में से एक था अरविन्द घोष, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, वीर सावरकर, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और लाला लाजपत राय स्वदेशी आंदोलन के मुख्य उद्घोषक थे। आगे चलकर यह स्वदेशी आंदोलन महात्मा गांधी की स्वाधीनता आंदोलन का भी केंद्र-बिन्दू बन गया। उन्होंने इसे "स्वराज की आत्मा" कहा।

भारत में स्वदेशी आंदोलन का इतिहास

स्वदेशी आंदोलन विशेषकर उस आन्दोलन को कहने के लिए जो बंग-भंग के विरोध में न केवल बंगाल अपितु पूरे ब्रिटिश भारत में चला गया। इसका मुख्य उद्देश्य अपने देश के सामान अपनाना और दूसरे देश के वस्तु का बहिष्कार करना था यद्यपि स्वदेशी का यह विचार बंग-भंग से बहुत पुराना है भारत में स्वदेशी के पहले-पहल नारा बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने "वांगदर्शन" का 1279 का भाद्र संख्या यानी 1872 ई। में ही विज्ञान सभा की प्रस्ताव रखने के लिए दिया गया था। उन्होंने कहा था- "जो विज्ञान स्वदेशी होने पर हमारा दास होता है, वह विदेशी होने के कारण हमारा भगवान बनता है, हम लोग दिन ब दिन साधनहीन हो रहे हैं। है, यह भारत के लिए भी भारतीयों के लिए भी एक विशाल अतिथिशाला बन गई है। "
इसके बाद भोलानाथ चन्द्र ने 1874 में शम्भुचन्द्र मुखोपाध्याय द्वारा प्रेरित "मुखर्जी मेगजीन" में स्वदेशी का नारा दिया था। उन्होंने लिखा था-

> *किसी प्रकार का शारीरिक बल प्रयोग नहीं करते राजनुग्य्य अस्वीकार नहीं करते और किसी नए कानून के लिए प्रार्थना नहीं करते हैं, तो भी हम अपने पूर्व संसाधन लौट सकते हैं। जहां स्थिति चरम में पहुंच जाए, वहां एकमात्र नहीं तो सबसे अधिक प्रभावी अस्त्र नैतिक शत्रुता होगा इस आश्रय को अपनाना कोई अपराध नहीं है आइए हम सभी लोग यह संकल्प करें कि विदेशी वस्तु नहीं खरीदेंगे। हमें हर समय यह याद*

www.ignited.in

रखना चाहिए कि भारत की उन्नति भारतीयों द्वारा ही संभव है।

जुलाई, सन 1903 में सरस्वती पत्रिका में 'स्वदेशी वस्त्र का स्वीकार' शीर्षक से एक कविता छापी रचनाकार का नाम नहीं था, लेकिन साल भर अंकों की सूची से पता चल जाएगा कि वह पत्रिका के सम्पादक महावीर प्रसाद द्विवेदी का रचना था। कविता का कुछ अंश उद्दत है-

'स्वदेशी' का विचार कांग्रेस के जन्म से पहले ही दिया गया था। जब 1905 ई। में बंग-भंग हुआ, तब स्वदेशी का नारा जोरों से लिया गया था उसी वर्ष कांग्रेस ने भी इसके पक्ष में मत प्रकट किया। देशी पूँजीपति उस समय मिलें खोल रहे थे, इसलिए स्वदेशी आंदोलन उनके लिए बड़ा ही लाभदायक साबित हुआ।

'स्वदेशी' का विचार कांग्रेस के जन्म से पहले ही दिया गया था। जब 1905 ई। में बंग-भंग हुआ, तब स्वदेशी का नारा जोरों से लिया गया था उसी वर्ष कांग्रेस ने भी इसके पक्ष में मत प्रकट किया। देशी पूँजीपति उस समय मिलें खोल रहे थे, इसलिए स्वदेशी आंदोलन उनके लिए बड़ा ही लाभदायक साबित हुआ।

इन दिनों जापान ने रूस पर विजय प्राप्त की उसकी असर सभी पूर्वी देशों पर हुआ भारत में बंग-भंग के विरोध में सभाओं में हो हो रहा है अब विदेशी वस्तु बहिष्कार आंदोलन ने भी बल पकड़ लिया। वंदे मातरम् इस युग का महामन्त्र बनाया 1906 के 14 और 15 अप्रैल को स्वदेशी आंदोलन के गढ़ वारासाल में बंगाल प्रादेशिक सम्मेलन होने का निश्चय हुआ। यद्यपि इस समय वारासाल में बहुत कुछ दुर्घटना की स्थिति थी, फिर भी जनता ने अपने नेता अश्विनी कुमार दत्त आदि से धन जन से इस सम्मेलन के लिए सहायता दी। उन दिनों से सार्वजनिक रूप से "वन्दे मातरम्" का नारा लगाया गैर कानूनी बन गया और कई युवाओं को नारा लगाया गया था, लेकिन इसके अलावा अन्य सजावटें भी मिलीं थीं। जिला प्रशासन ने स्वागतसमिती पर यह शर्त लगा दी कि प्रतिनिधियों का स्वागत करते समय किसी स्थिति में "वन्दे मातरम्" का नारा नहीं लगाया जाएगा। स्वागत समिति ने इसे मान लिया किंतु उग्र दल ने इसे स्वीकार नहीं किया। जो लोग "वन्दे मातरम्" का नारा नहीं लगा रहे थे, वे भी उनकी बैज लगाए हुए थे। जेल में ही प्रतिनिधि सभाओं में जाने के लिए निकले थे ही उन पर पुलिस टूट पड़े और लाठियों की वर्षा होने लगी। सुरेंद्र नाथ बानगेरी गिरफ्तार किया गया उन पर 200 रुपये जुर्माना हुआ था। वह जर्माना देकर सभास्थानस्थ पहुँचे सभा में पहले ही पुलिस के अत्याचारों की कहानी सुनाई गई पहले दिन किसी तरह की सद्भावना हुई, पर अगले दिन पुलिस कप्तान ने कहा कि अगर "वान्डे मातरम्" का नारा लगाया गया तो सभा बंद कर दिया जाए। लोग इस पर राजी नहीं हुए थे, इसलिए सम्वेषण यहां समाप्त हो गया पर से जनता में और उत्साह बढ़ा

लोकमान्य तिलक और गणेश श्रीकृष्ण खापर्डे भी इस सम्बन्ध में कलकत्ता पहुंचे और बंगाल में भी शिवजी उत्सव का प्रवर्तन किया गया। रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने इसी अवसर पर 'शिवजी' शीर्षक से प्रसिद्ध कविता लिखी। 10 जून को तीस हजार कैलकुतावासियों ने लोकमान्य तिलक के विरस जुलूस निकाला। इन दिनों में बंगाल में बहुत सारे नये समाचार पत्र निकले, जिनमें "वन्दे मातरम्" और "युगांतर" प्रसिद्ध हैं

इसी आंदोलन के दौरान विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर पिकटिंग शुरू हुई थी। अनुष्मन समितियां बनीं जो दबाए जाने के कारण क्रान्तिकारी समितियों में परिणत हो गयीं। अरविन्द के छोटे भाई वारींद्र कुमार घोष ने बंगाल में क्रांतिकारी दल स्थापित किया। इसी दली से खडीराम बोस ने जज किंग्सफ़ोर्ड की धोखे में कैनेडी परिवार को मार डाला, कानाईलाल ने जेल के भीतर मुखबिर नरेन्द्र गोसाई को मारा और अंत में वारीद स्वयं अलिपुर में निंदा किया। उनको और उनके साथियों को लंबा सजा दिया हुआ हुआ।

आन्दोलन की घोषणा

दिसंबर, 1 9 03 ई। में बंगाल विभाजन प्रस्ताव की ख़बर फैलाने पर चारों ओर विरोध में कई बैठक हुई थी, जिसमें ज्यादातर ढाका, मेमन सिंह और चटगाँव में हुई थी। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, कृष्ण कुमार मिश्र, पृथ्वीशचन्द्र राय जैसे बंगाल के नेताओं ने 'बंगाली', 'हितवादी' और 'संजीवनी' जैसे अख़बारों के विभाजन की प्रस्ताव की आलोचना की। विरोध के बावजूद कर्ज़न ने 19 जुलाई, 1 9 05 ई में 'बंगाल विभाजन' की घोषणा की घोषणा की, जिसके परिणामस्वरूप 7 अगस्त, 1 9 05 को 'स्वदेशी आंदोलन' की घोषणा में 'टाउन हॉल' के कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) की घोषणा की गई और ' बहिष्कार प्रस्ताव 'पास किया गया इसी बैठक में ऐतिहासिक बहिष्कृत प्रस्ताव पारित हुआ 16 अक्टूबर, 1 9 05 को बंगाल विभाजन का लागू होने के साथ ही विभाजन प्रभावी हो गया। [1]

बहिष्कार आंदोलन

अपनी मांगों को मनाना करने के लिए उदारवादीो की अनुनय-विनय की नीति अस्वीकृत करते हुए उसे उग्रवादियों ने 'राजनीतिक भिक्षावृत्ति' का संज्ञा दिया। तिलक ने कहा कि 'हमारा उद्देश्य आत्म निर्भरता है, भिक्षावतन नहीं।' विपिन

चन्द्र पाल ने कहा कि 'यदि सरकार मेरे पास आकर कहती है कि स्वराज्य ले लो, तो मुझे उपहार देने के लिए धन्यवाद कह रहा है कि' मैं उस वस्तु को स्वीकार नहीं कर सकता, जिसको पाने के लिए मुझे सामर्थ्य नहीं है। ' इन नेताओं ने विदेशी माल का बहिष्कार, स्वदेशी माल को अंगीकार कर राष्ट्रीय शिक्षा और सत्यग्रह की महत्व पर बल दिया। उदारवादी नेता स्वदेशी और बहिष्कार आन्दोलन को बंगाल तक ही सीमित रखना चाहता था और उनका बहिष्कार आंदोलन विदेशी माल के बहिष्कार तक सीमित था, लेकिन उग्रवादी नेता इन आंदोलनों का प्रसार देश के विस्तृत क्षेत्र में करना चाहता था। इनके बहिष्कार आंदोलन की तुलना गांधी जी की 'असहयोग आंदोलन' से किया जा सकता है। इन बहिष्कार आंदोलन को असहयोग आंदोलन और शांतिपूर्ण प्रतिरोध तक ले जाना चाहते थे केवल विदेशी कपड़े का ही बहिष्कार नहीं, लेकिन सरकारी स्कूलों, अदालतों, उपाधि सरकारी नौकरियों का भी बहिष्कार में इसमें शामिल था। [2]

आन्दोलन का प्रभाव

1905 ई। कांग्रेस में 'बनारस सम्िवेशन' की अध्यक्षता करते हुए गोकले ने भी स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन को समर्थन दिया। उग्रवादी दल के नेता तिलक, विपिनचन्द्र पाल, लाजपत राय और अरविन्द घोष ने पूरे देश में इस आंदोलन को फैलाना चाहा स्वदेशी आंदोलन के दौरान लोगों की आंदोलन के प्रति समर्थन को एकत्र करना में 'स्वदेश बन्धव समिति' का महत्त्वपूर्ण भूमिका है इसकी स्थापना के लिए अष्टविनी कुमार दत्त ने की थी शीध्र ही स्वदेशी आंदोलन का परिणाम सामने आया, जिसके परिणामस्वरूप 15 अगस्त, 1906 ई। को एक राष्ट्रीय शिक्षा परिषद की स्थापना की गयी। स्वदेशी आंदोलन का प्रभाव सांस्कृतिक क्षेत्र पर भी पड़ा, बंगाल साहित्य के लिए यह समय स्वर्ण काल का था। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इसी समय 'अमार सोनार बंगला' नामक एक गीत लिखा, जो 1971 ई। में बांग्लादेश का राष्ट्रीय गान बना रवीन्द्रनाथ टैगोर को उनके गीतों का संग्रह 'गीतांजलि' के लिए साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला। कला के क्षेत्र में अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने पाश्चात्य प्रभाव से अलग-अलग चित्रों को शुरू किया था। स्वदेशी आंदोलन में पहली बार महिलाओं ने पूर्ण रूप से प्रदर्शन किया। [1]

टिप्पणी टिप्पणी और संदर्भ

1. ↑ तक ऊपर जायें: 1.0 1.1 बंगाल विभाजन (हिंदी) (पीएचपी) भारत में अभिगम दिनांक: 21 अप्रैल, 2012।
2. ऊपर जायें ↑ भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन (द्वितीय चरण) (हिन्दी) (पीएचपी) भारतकोश अभिगम दिनांक: 21 अप्रैल, 2012।

स्वदेशी आंदोलन की प्रकृति

बंगालियों ने बहिष्कार आंदोलन को अंतिम उपाय के रूप में अपनाया, जब उन्होंने ब्रिटिशों को सर्वसम्मति से राष्ट्रीय मांग स्वीकार करने के लिए मजबूर करने के लिए मुखर विरोध, अपील, याचिकाएं और सम्मेलनों के बारे में ज्ञात संवैधानिक आंदोलन के शस्त्रागार को समाप्त कर दिया था।

बॉयकॉट की मूल अवधारणा मुख्यतः एक आर्थिक एक थी। इसके दो अलग थे, लेकिन संबद्ध प्रयोजनों को ध्यान में रखते हुए। पहला ब्रिटिश सामान पर ब्रिटिश सामग्रियों के बहिष्कार से ब्रिटिश लोगों पर दबाव डालना था, विशेषकर मैनचेस्टर कपास के सामान जिसके लिए बंगाल भारत में सबसे अमीर बाजार प्रदान करता था। दूसरे, यह स्वदेशी उद्योग के पुनरुत्थान के लिए जरूरी माना जाता था, जो अपने शिशु अवस्था में विदेशी उद्योगों के साथ मुक्त प्रतिस्पर्धा के चेहरे में कभी भी विकास नहीं हो पाता था, जो कि अत्यधिक विकसित उद्योग थे।

बॉयकॉट की तरह, भारतीय उद्योग के विकास के लिए स्वदेशी एक विशुद्ध रूप से आर्थिक उपाय था, यह भारत में एक बिल्कुल नया विचार नहीं था। यह 1 9वीं सदी में कई प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों द्वारा प्रचारित किया गया, गोपाल हरि देशमुख, जिसे बॉम्बे के लोकहितवादी, आर्य समाज के संस्थापक दयानंद सरस्वती और कलकत्ता के भोलानाथ चंद्र के नाम से जाना जाता है। लेकिन उनके द्वारा बोया गया बीज अंकुरित नहीं हुआ जब तक कि एकजुट लोगों के गंभीर संकल्प से मिट्टी को उपजाऊ नहीं हो पाता, और इससे भी ज्यादा परेशान हो जाता है; लोगों की आवाज़ के लिए कठोर शासन, घृणित सरकार द्वारा उन पर किए गए महान ग़लती को हटाने के लिए बॉयकॉट और स्वदेशी के जुड़वां हथियारों को भूलने के लिए

बाद में, आर्थिक बहिष्कार समय बीतने के साथ पृष्ठभूमि में हो गया और यह हर क्षेत्र में अंग्रेजों के साथ असहयोग के विचार में विकसित हो गया और उद्देश्य उद्देश्य पूर्ण स्वतंत्रता के दूर के लक्ष्य के साथ देश का राजनीतिक उत्थान था। अधिक उन्नत अनुभाग की आंखों से पहले बड़े। इसी प्रकार, स्वदेशी ने भारतीय उद्योग को बढ़ावा देने की मूल अवधारणा को पूरी तरह से बाहर कर दिया। यह शब्द स्वदेशी का शाब्दिक अर्थ के आधार पर एक नया रूप मानता है, अर्थात् सब कुछ भारतीयों के लिए लगाव।

आर्थिक बहिष्कार और स्वदेशी

आर्थिक अर्थों में, स्वदेशी एक सकारात्मक और नकारात्मक तत्व दोनों का प्रतिनिधित्व करेगा। इनके बारे में निम्नानुसार चर्चा की गई है: -

आर्थिक स्वदेशी का सकारात्मक तत्व स्वदेशी सामानों का उत्थान था। विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार से स्वदेशी सामान की मांग में वृद्धि हुई, विशेष रूप से कपड़े जो आपूर्ति की कमी महसूस करते थे। बॉम्बे और अहमदाबाद के मिल मालिक अपने बचाव में आए बंगाल में बॉयकॉट आंदोलन ने भारत में कपास के मिलों को एक गति और प्रेरणा शक्ति प्रदान की थी और इस प्रकार इस अवसर को प्रस्तुत करने से मिल मालिकों द्वारा शोषण किया गया था। उस समय शिकायत की गई थी कि बॉम्बे मिल मालिकों ने बंगाली भावनात्मकता के रूप में माना जाता है, किसी भी बलिदान पर स्वदेशी कपड़े खरीदने के लिए उनकी कीमत पर भारी लाभ कमाया।

बंगाल को हथकरघा के मोटे उत्पादन द्वारा बॉम्बे मिल से आपूर्ति को पूरक करना था। 18 वीं शताब्दी में बंगाल में बुनाई उद्योग बहुत ही सफल रहा था जब तक कि अंग्रेजों ने प्रांत के ऊपर अपना शासन स्थापित करने के बाद इसे बर्बाद कर दिया था। आर्थिक बहिष्कार आंदोलन उस उद्योग को पुनर्जीवित करने का एक उपयुक्त अवसर था। कपड़े का उत्पादन बहुत मोटा था लेकिन स्वदेशी आंदोलन की सच्ची भावना में बंगालियों द्वारा स्वीकार किया गया था। देश भर में बहुत लोकप्रिय होकर एक गाना ने लोगों से अनुरोध किया कि वे मोटे कपड़ों के लिए सम्मान की जगह दे जो माँ का तोहफा है, जो एक बेहतर एक पेश करने के लिए बहुत गरीब है।

आर्थिक स्वदेशी का नकारात्मक तत्व (यह केवल ब्रिटिश के संबंध में नकारात्मक माना जा सकता है) विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और जल रहा था। यद्यपि मैनचेस्टर क्लॉथ हमला का मुख्य लक्ष्य था, आंदोलन अन्य ब्रिटिश निर्माताओं को भी बढ़ाया गया, जैसे कि नमक और चीनी और सामान्य रूप में विलासिता के सामान। स्वदेशी और आर्थिक बहिष्कार के विचारों को जीवित रखा गया और अख़बारों, जुलूसों, लोकप्रिय गीतों, जागरूकता रखने के लिए स्वयंसेवकों के नामांकन और विदेशी कपड़ा, नमक और चीनी के अवसरों के द्वारा हर दरवाजे पर घर लाया गया। विभिन्न लोगों से जुड़ी विदेशी लोगों के पुराने कपड़ों को एक ढेर में रखा गया था और फिर इसे आग लगा दिया गया था। उग्र आग की लपटों को ध्यान में रखते हुए प्रसिद्ध नेताओं का सम्मान करने के लिए एक विशेष तरीके के रूप में देखा गया था और उनके शुभकामनाएं स्वदेशी के उत्साह के लिए उत्साह के रूप में महान मूल्य के रूप में माना जाता था।

विदेशी चीनी का उपयोग करने वाले किसी व्यक्ति पर जुर्माना लगाया गया था विदेशी सिगरेट सड़कों में खरीदे गए और जला दिए गए, ब्राह्मणों ने उन घरों में किसी भी धार्मिक समारोह की सहायता से इनकार कर दिया जहां यूरोपीय नमक और चीनी का उपयोग किया गया और मारवाड़ी को विदेशी लेखों के आयात की चेतावनी दी गई। इन सभी अस्थियों ने लोगों की अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया। उच्च मूल्य पर खरीदा गया 'मैनचेस्टर-निर्मित माल' जलाकर सचमुच लोगों को प्रभावित करता है लेकिन राष्ट्रीय उत्साह से बहती है, लोगों ने विदेशी वस्तुओं को छोड़ने और जलाया।

स्वदेशी और सामाजिक बहिष्कार [संपादित करें]

मुख्य बिंदु हैं: सामाजिक बहिष्कार आर्थिक स्वदेशी आंदोलन का नतीजा था। सरकार के दमनकारी उपायों के खिलाफ जाने के लिए इसका प्रचार किया गया था। सामाजिक बहिष्कार एक बहुत ही शक्तिशाली हथियार था। एक व्यक्ति विदेशी सामान बेच रहा है या खरीद रहा है या किसी भी तरह से स्वदेशी आंदोलन का विरोध करता है और इसे नीचे डालने में सरकार की सहायता के लिए विभिन्न अपमानों के विभिन्न डिग्री का सामना किया जाएगा। इस तरह के सामाजिक बहिष्कार एक आदमी को बहुत दुखी बनाता है, कभी-कभी बहुत दुखी होता है और सरकार उसे अपने संकट में मदद करने के लिए बहुत कम कर सकती है। लेकिन ऐसे अहिंसक बहिष्कार केवल उत्पीड़न का एकमात्र रूप नहीं था। कभी-कभी, 'पाखण्डी' को भौतिक हानि और शारीरिक या मानसिक दर्द का सामना करना पड़ेगा

स्वदेशी और राष्ट्रीय शिक्षा [संपादित करें]

बहिष्कार और स्वदेशी आंदोलन को बढ़ावा देने में छात्र ने उन पर ब्रिटिश राज के क्रोध और हिंसा को जन्म दिया। बहिष्कार आंदोलन के साथ किसी भी तरह से स्वयं को संबद्ध करने के लिए गंभीर दंड के खतरे में छात्रों को वर्जित करने के लिए परिपत्र जारी किए गए थे। यहां तक कि सड़कों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर वंदे मातरम की रोने का भी दंडनीय अपराध माना जाता है। जिन स्कूलों या कॉलेजों ने आदेश को अवज्ञा नहीं किया, उन्हें न केवल सरकार के अनुदान की वापसी और असहमति के साथ धमकी दी गई, लेकिन उनके छात्रों को सरकारी सेवा के लिए अपात्र घोषित किया जाना था। शैक्षिक संस्थानों के अधिकारियों को अपने विद्यार्थियों पर सख्त नजर रखने के लिए कहा गया था, और यदि उन्हें नियंत्रित करने में असमर्थ हैं, तो आवश्यक अनुशासनात्मक कार्रवाई करने के लिए शिक्षा विभाग के नामों की रिपोर्ट करना था। मजिस्ट्रेटों को शिक्षकों और शैक्षिक संस्थानों के प्रबंधन से जुड़े उन लोगों को सूचित करने के लिए कहा गया था, जो आवश्यक थे वे विशेष कॉन्स्टेबल के रूप में नामांकित हो सकते हैं। लोक निर्देश की दिशा में कॉलेजों के प्रिंसिपलों से उन कारणों को दिखाने के लिए कहा गया है कि क्यों उनके छात्रों ने भाग लेने में भाग लिया, उन्हें निष्कासित नहीं किया जाना चाहिए।

इस सब ने देश में आक्रोश का तूफान पैदा किया और भारतीय स्वामित्व वाली प्रेस ने सबसे मजबूत भाषा में परिपत्रों की निंदा की। बंगाल के लोगों ने चुनौती दी थी रंगपुर में कुछ कॉलेजों के छात्रों ने सरकार के आदेशों को तोड़ दिया और जब उन्हें जुर्माना लगाया गया, तो संरक्षक ने उन्हें भुगतान करने से इनकार कर दिया और उन बच्चों के लिए एक राष्ट्रीय स्कूल बना दिया जो कि निष्कासित हुए थे। शिक्षकों को भी लड़कों को सजा नहीं करने के लिए इस्तीफा देने के लिए कहा गया।

अधिकारियों की कार्रवाई ने कलकत्ता विश्वविद्यालय का बहिष्कार करने वाले विद्यार्थियों के बीच एक आंदोलन को जन्म दिया जिसके तहत वे गोलमालखाना (हाउस ऑफ मैन्युमेंटिंग गुलाम) के रूप में वर्णित थे। 10 नवंबर 1905 को आयोजित विभिन्न जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में बंगाल की एक बड़ी संख्या में उपस्थित हुए एक सम्मेलन में, शिक्षा-साहित्यिक, वैज्ञानिक और व्यवस्था की एक प्रणाली को व्यवस्थित करने के लिए एक बार राष्ट्रीय शिक्षा परिषद में स्थापित करने का निर्णय लिया गया तकनीकी-राष्ट्रीय स्तर पर और राष्ट्रीय नियंत्रण के तहत। राष्ट्रीय स्कूलों की संख्या भी समय के साथ तेजी से बढ़ी।

स्वदेशी, संस्कृति और प्रेस

यह शायद सांस्कृतिक क्षेत्र में था कि स्वदेशी आंदोलन के प्रभाव को सबसे अधिक चिह्नित किया गया था। रबींद्रनाथ टैगोर, रजनी कन्टा सेन, द्विजेंदराल रे, मकुंद दास, सईद अबू मोहम्मद और अन्य के समय में बनाए गए गीत बाद में सभी रंगों के राष्ट्रवादी के लिए चलती हुई भावना बन गए। उस समय लिखे गए रबींद्रनाथ के अमर सोनर बांगला, बाद में बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम को प्रेरित करते थे और 1971 में देश के राष्ट्रीय गान के रूप में अपनाया गया था। इसी प्रकार, भारतीय कला में बहुत सुधार हुआ।

वंदे मातरम् के लेखन, व्यावहारिक रूप से बंगाल के राजनीतिक रुख में क्रांतिकारित। कलकत्ता के चार प्रमुख समाचार पत्र- बंगाली, अमृता बाज़ार पत्रिका, भारतीय मिरर और हिंदू देशभक्त ने बंगाल के इस प्रभाग के खिलाफ विरोध किया। इसके अलावा, संजीवनी और बंगाबाशी जैसे स्थानीय समाचार पत्रों ने इस प्रस्ताव के प्रति खुली दुश्मनी व्यक्त की। 14 दिसंबर 1903 को जारी अपने मुद्दे पर अमृता बाज़ार पत्रिका ने हर शहर और गांव में सरकार को प्रस्तुत करने की याचिका तैयार करने के लिए लोक सभा की बैठक बुलाई थी, जिस पर लाखों लोगों ने हस्ताक्षर किए थे।

सरकार द्वारा दमनकारी उपाय

विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और जलाए जाने के अलावा, लोगों ने भी 'शांतिपूर्ण फलक' का सहारा लिया, जो कि भविष्य में लगभग हर तरह के राजनीतिक आंदोलन में एक सामान्य विशेषता बनने का लक्ष्य था। इन सभी ने पुलिस को हस्तक्षेप करने का एक अच्छा मौका दिया। स्वयंसेवकों को मोटे तौर पर संभाला गया और यदि वे विरोध करते हैं, तो पुलिस उन्हें लाठियों से मार देते हैं। ये 'विनियमन लाठीस', जिन्हें बुलाया गया था, पहली बार पुलिस ने पैकरों को दूर करने और भीड़ को फैलाने के लिए पुलिस द्वारा आज़ादी से इस्तेमाल किया था, चाहे दंगेबाज या शांतिपूर्ण, अगर उन्हें धरना देने वाले स्वयंसेवकों के प्रति सहानुभूति चाहिए। बन्दे मातरम का उच्चारण इस तरह के सहानुभूति का एक निर्विवाद प्रमाण था और बाद

में इसे सार्वजनिक जगह में बांडी मातरम को चिल्लाना गैरकानूनी घोषित किया गया।

आधिकारिक वाक्यांश, "हल्के लाठी का आरोप" पुलिस के हमले का वर्णन करने के लिए, एक मिथ्या नाम था। यह निश्चित रूप से हल्के नहीं था क्योंकि शवों पर भारी घावों ने जोर से घोषित किया। सरकार ने शैक्षिक संस्थानों को अपने लड़कों को नियंत्रित करने और स्वदेशी आंदोलन में भाग लेने से रोकने के निर्देश भी जारी किए हैं। ग्रामीण बाजारों पर प्रतिबंध लगाया गया था, जुलूस और बैठकों पर लगाए गए, नेताओं को बिना किसी मुकदमे के कारावास में लगाया गया था और वफादार मुसलमानों को यादगार हिंदुओं के खिलाफ जाने के लिए बनाया गया था।

स्वदेशी का प्रभाव और अनुमान

बंगाल में विदेशी वस्तुओं के आयात पर बॉयकॉट आंदोलन के प्रभाव का सही अनुमान बनाना मुश्किल है, क्योंकि कोई सटीक आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। हालांकि, आधिकारिक और गोपनीय पुलिस रिपोर्टों से ऐसा प्रतीत होता है कि पहले दो या तीन सालों के लिए, ब्रिटिश सामान के आयात में एक गंभीर गिरावट आई थी, विशेष रूप से कपड़ा।

निष्क्रिय प्रतिरोध लंबे समय तक नहीं जा सका और उसका अंतिम परिणाम शक नहीं हो सकता। यह गुप्त क्रांतिकारी संगठनों के नेटवर्क के अचानक उद्भव की उत्पत्ति थी जो सरकार को समान शर्तों पर समानता, सामूहिक रूप से हथियार और आतंकवाद द्वारा आतंकवाद का विरोध करने के लिए निर्धारित किया गया था।

स्वदेशी विभाजन और सरकार के उपायों ने अंततः हिंदुओं और मुसलमानों के विभाजन और 1 9 06 में मुस्लिम लीग के गठन का नेतृत्व किया। इस पर महात्मा गांधी ने इसका विरोध किया क्योंकि वह हिंदू-मुस्लिम अंतर के खिलाफ थे

निष्कर्ष

- स्वदेशी आंदोलन पूर्व-गांधीवादी आंदोलन में सबसे सफल रहा। यह राष्ट्रवादी आंदोलन का एक बड़ा आधार बन गया, जिसने भारत में संगठित राजनीतिक आंदोलन की शुरुआत की।
- स्वदेशी आंदोलन में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में एक अनोखी जगह है, क्योंकि उसके बाद भारतीय राजनैतिक परिदृश्य के सभी रुझान और पैटर्न, चाहे रूढ़िवादी या कट्टरपंथी, इस आंदोलन को अपनी उत्पत्ति का श्रेय दे रहे हैं।

संदर्भ

[एल। एम। भोले, गांधीवादी सामाजिक आर्थिक विचारों पर निबंध, शिप्रा प्रकाशन, दिल्ली, 2000. अध्याय 14: स्वदेशी: अर्थ और समकालीन प्रासंगिकता]

स्वदेशी आंदोलन "तीसरा स्वदेशी अभियान 20 वीं शताब्दी में शुरू हुआ और आंदोलन जारी है। आंदोलन के मुख्य चेहरे"। स्वदेशी आंदोलन 15 अगस्त 2009 को पुनःप्राप्त

वेबर, थॉमस (मई **1 999)** "गांधी, दीप पारिस्थितिकी, शांति अनुसंधान और बौद्ध अर्थशास्त्र" जर्नल ऑफ़ पीस रिसर्च **36 (3): 34 9 -361** डोई: **10.1177 / 0022343399036003007**

Corresponding Author

Anita Pandey*

Research Scholar, Mahatama Gandhi Kashi Vidya Peeth University, Varanasi (UP)

E-Mail – anitapandey31@gmail.com